Rev

Chapter 6

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

Καὶ	εἶδον,	ὅτε	ἤνοιξεν	τὸ	Ἀρνίον	μίαν	ἐκ	τῶν	ἑπτὰ	σφραγίδων,	καὶ
और	मैंने-देखा,	जब	खोला	-वह	मेमने-ने	एक	-में-से	-उन	सात	मुहरों,	और
G2532	G3708	G3753	G0455	G3588	G0721	G1520	G1537	G3588	G2033	G4973	G2532

ἤκουσα	ἑνὸς	ἐκ	τῶν	τεσσάρων	ζῴων	λέγοντος,	ὡς	φωνῇ	βροντῆς,	Ἔρχου!
मैंने-सुनी	एक	-में-से	-उन	चार	प्राणियों	कहते-हुए,	जैसी	आवाज़	गरज-की,	आ!
G0191	G1520	G1537	G3588	G5064	G2226	G3004	G5613	G5456	G1027	G2064

> मैंने देखा कि मेमने ने सात मुहरों में से एक को खोला तभी उन चार प्राणियों में से एक को मैंने मेघ गर्जना जैसे स्वर में कहते सुना, “आ!”

2

καὶ	εἶδον,	καὶ	ἰδοὺ,	ἵππος	λευκός,	καὶ	ὁ	καθήμενος	ἐπ’	αὐτὸν
और	मैंने-देखा,	और	देखो,	घोड़ा	श्वेत,	और	वह	बैठा-हुआ	-पर	उस
G2532	G3708	G2532	G3708	G2462	G3022	G2532	G3588	G2521	G1909	G0846

ἔχων	τόξον;	καὶ	ἐδόθη	αὐτῷ	στέφανος,	καὶ	ἐξῆλθεν	νικῶν,	καὶ	ἵνα
रखता-था	धनुष;	और	दिया-गया	उसे	मुकुट,	और	वह-निकला	जीतता-हुआ,	और	ताकि
G2192	G5115	G2532	G1325	G0846	G4735	G2532	G1831	G3528	G2532	G2443

νικήσῃ.
वह-जीते।
G3528

> जब मैंने दृष्टि उठाई तो पाया कि मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार धनुष लिए हुए था। उसे विजय मुकुट पहनाया गया और वह विजय पाने के लिए विजय प्राप्त करता हुआ बाहर चला गया।

3

Καὶ	ὅτε	ἤνοιξεν	τὴν	σφραγῖδα	τὴν	δευτέραν,	ἤκουσα	τοῦ	δευτέρου
और	जब	उसने-खोली	-वह	मुहर	-वह	दूसरी,	मैंने-सुनी	-उस	दूसरे
G2532	G3753	G0455	G3588	G4973	G3588	G1208	G0191	G3588	G1208

ζῴου	λέγοντος,	Ἔρχου!
प्राणी	कहते-हुए,	आ!
G2226	G3004	G2064

> जब मेमने ने दूसरी मुहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को कहते सुना, “आ!” इस पर अग्नि के समान लाल रंग का

4

καὶ	ἐξῆλθεν,	ἄλλος	ἵππος	πυρρός;	καὶ	τῷ	καθημένῳ	ἐπ’	αὐτὸν,	ἐδόθη
और	निकला,	अन्य	घोड़ा	लाल;	और	-उस	बैठे-हुए-को	-पर	उस,	दिया-गया
G2532	G1831	G0243	G2462	G4450	G2532	G3588	G2521	G1909	G0846	G1325

αὐτῷ	λαβεῖν	τὴν	εἰρήνην	ἐκ	τῆς	γῆς,	καὶ	ἵνα	ἀλλήλους	σφάξουσιν;
उसे	लेना	-वह	शान्ति	-से	-उस	पृथ्वी,	और	ताकि	एक-दूसरे-को	वे-घात-करें;
G0846	G2983	G3588	G1515	G1537	G3588	G1093	G2532	G2443	G0240	G4969

καὶ	ἐδόθη	αὐτῷ	μάχαιρα	μεγάλη.
और	दी-गई	उसे	तलवार	बड़ी।
G2532	G1325	G0846	G3162	G3173

> एक और घोड़ा बाहर आया। इस पर बैठे सवार को धरती से शांति छीन लेने और लोगों से परस्पर हत्याएँ करवाने को उकसाने का अधिकार दिया गया था। उसे एक लम्बी तलवार दे दी गयी।

5 Καὶ ὅτε ἤνοιξεν τὴν σφραγῖδα τὴν τρίτην, ἤκουσα τοῦ τρίτου ζῴου
और जब उसने-खोली -वह मुहर -वह तीसरी, मैंने-सुनी -उस तीसरे प्राणी
G2532 G3753 G0455 G3588 G4973 G3588 G5154 G0191 G3588 G5154 G2226

λέγοντος, Ἔρχου; καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ, ἵππος μέλας, καὶ ὁ καθήμενος
कहते-हुए, आ; और मैंने-देखा, और देखो, घोड़ा काला, और वह बैठा-हुआ
G3004 G2064 G2532 G3708 G2532 G3708 G2462 G3189 G2532 G3588 G2521

ἐπ’ αὐτὸν, ἔχων ζυγὸν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ.
-पर उस, रखता-था तराज़ू -में -उस हाथ अपने।
G1909 G0846 G2192 G2218 G1722 G3588 G5495 G0846

> मेमने ने जब तीसरी मुहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को कहते सुना, “आ!” जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ मेरे सामने एक काला घोड़ा खड़ा था। उस पर बैठे सवार के हाथ में एक तराजू थी।

6 καὶ ἤκουσα ὡς φωνὴν ἐν μέσῳ τῶν τεσσάρων ζῴων, λέγουσαν, Χοῖνιξ
और मैंने-सुनी जैसी आवाज़ -में बीच -उन चार प्राणियों, कहती-हुई, सेर
G2532 G0191 G5613 G5456 G1722 G3319 G3588 G5064 G2226 G3004 G5518

σίτου δηναρίου, καὶ τρεῖς χοίνικες κριθῶν δηναρίου; καὶ τὸ ἔλαιον καὶ
गेहूँ-का दीनार-को, और तीन सेर जौ-का दीनार-को; और -वह तेल और
G4621 G1220 G2532 G5140 G5518 G2915 G1220 G2532 G3588 G1637 G2532

τὸν οἶνον μὴ ἀδικήσῃς.
-वह दाखरस मत हानि-पहुँचा।
G3588 G3631 G3361 G0091

> तभी मैंने उन चारों प्राणियों के बीच से एक शब्द सा आते सुना, जो कह रहा था, “एक दिन की मज़दूरी के बदले एक दिन के खाने का गेहूँ और एक दिन की मज़दूरी के बदले तीन दिन तक खाने का जौ। किन्तु जैतून के तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।”

7 Καὶ ὅτε ἤνοιξεν τὴν σφραγῖδα τὴν τετάρτην, ἤκουσα φωνὴν τοῦ
और जब उसने-खोली -वह मुहर -वह चौथी, मैंने-सुनी आवाज़ -उस
G2532 G3753 G0455 G3588 G4973 G3588 G5067 G0191 G5456 G3588

τετάρτου ζῴου λέγοντος, Ἔρχου!
चौथे प्राणी कहते-हुए, आ!
G5067 G2226 G3004 G2064

> फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली तो चौथे प्राणी को मैंने कहते सुना, “आ!”

8 καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ, ἵππος χλωρός, καὶ ὁ καθήμενος ἐπάνω αὐτοῦ,
और मैंने-देखा, और देखो, घोड़ा पीला, और वह बैठा-हुआ ऊपर उसके,
G2532 G3708 G2532 G3708 G2462 G5515 G2532 G3588 G2521 G1883 G0846

ὄνομα αὐτῷ Ὁ Θάνατος, καὶ ὁ ᾅδης ἠκολούθει μετ’ αὐτοῦ; καὶ
नाम उसका -वह मृत्यु, और -वह अधोलोक पीछे-चलता-था -के-साथ उसके; और
G3686 G0846 G3588 G2288 G2532 G3588 G0086 G0190 G3326 G0846 G2532

ἐδόθη αὐτοῖς ἐξουσία ἐπὶ τὸ τέταρτον τῆς γῆς, ἀποκτεῖναι ἐν ῥομφαίᾳ,
दिया-गया उन्हें अधिकार -पर -वह चौथाई -की पृथ्वी, मारना -से तलवार,
G1325 G0846 G1849 G1909 G3588 G5067 G3588 G1093 G0615 G1722 G4501

καὶ ἐν λιμῷ, καὶ ἐν θανάτῳ, καὶ ὑπὸ τῶν θηρίων τῆς γῆς.
और -से अकाल, और -से मृत्यु, और -के-द्वारा -उन जानवरों -की पृथ्वी।
G2532 G1722 G3042 G2532 G1722 G2288 G2532 G5259 G3588 G2342 G3588 G1093

> फिर जब मैंने दृष्टि उठायी तो मेरे सामने मरियल सा पीले हरे से रंग का एक घोड़ा उपस्थित था। उस पर बैठे सवार का नाम था “मृत्यु” और उसके पीछे सटा हुआ चल रहा था प्रेत लोक। धरती के एक चौथाई भाग पर उन्हें यह अधिकार दिया गया कि युद्धों, अकालों, महामारियों तथा धरती के हिंसक पशुओं के द्वारा वे लोगों को मार डालें।

9 Καὶ ὅτε ἤνοιξεν τὴν πέμπτην σφραγῖδα, εἶδον ὑποκάτω τοῦ θυσιαστηρίου
और जब उसने-खोली -वह पाँचवीं मुहर, मैंने-देखा नीचे -उस वेदी
G2532 G3753 G0455 G3588 G3991 G4973 G3708 G5270 G3588 G2379

τὰς ψυχὰς τῶν ἐσφαγμένων διὰ τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, καὶ διὰ
-वे प्राण -उन घात-किए-गए -के-कारण -उस वचन -उस परमेश्वर-के, और -के-कारण
G3588 G5590 G3588 G4969 G1223 G3588 G3056 G3588 G2316 G2532 G1223

τὴν μαρτυρίαν ἣν εἶχον;
-वह गवाही जो उनके-पास-थी;
G3588 G3141 G3739 G2192

> फिर उस मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो मैंने वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा जिनकी परमेश्वर के सुसन्देश के प्रति आत्मा के तथा जिस साक्षी को उन्होंने दिया था, उसके कारण हत्याएँ कर दी गयीं थीं।

10 καὶ ἔκραξαν φωνῇ μεγάλῃ, λέγοντες, Ἕως πότε, ὁ Δεσπότης, ὁ
और वे-पुकारे आवाज़ बड़ी, कहते-हुए, कब-तक, कब-तक, हे स्वामी, हे
G2532 G2896 G5456 G3173 G3004 G2193 G4219 G3588 G1203 G3588

ἅγιος καὶ ἀληθινός, οὐ κρίνεις, καὶ ἐκδικεῖς τὸ αἷμα ἡμῶν, ἐκ
पवित्र और सच्चे, नहीं तू-न्याय-करता, और बदला-लेता-है -वह लहू हमारा, -से
G0040 G2532 G0228 G3756 G2919 G2532 G1556 G3588 G0129 G1473 G1537

τῶν κατοικούντων ἐπὶ τῆς γῆς?
-उन रहनेवालों -पर -उस पृथ्वी?
G3588 G2730 G1909 G3588 G1093

> ऊँचे स्वर में पुकारते हुए उन्होंने कहा, “हे पवित्र एवम् सच्चे प्रभु! हमारी हत्याएँ करने के लिए धरती के लोगों का न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिए तू कब तक प्रतीक्षा करता रहेगा?”

11 καὶ ἐδόθη αὐτοῖς ἑκάστῳ στολὴ λευκή; καὶ ἐρρέθη αὐτοῖς ἵνα
और दी-गई उन्हें प्रत्येक-को वस्त्र श्वेत; और कहा-गया उनसे कि
G2532 G1325 G0846 G1538 G4749 G3022 G2532 G2046 G0846 G2443

ἀναπαύσονται ἔτι χρόνον μικρόν, ἕως πληρωθῶσιν καὶ οἱ σύνδουλοι
वे-विश्राम-करें अभी समय थोड़ा, जब-तक पूरे-हों भी -वे सहदास
G0373 G2089 G5550 G3398 G2193 G4137 G2532 G3588 G4889

αὐτῶν, καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν, οἱ μέλλοντες ἀποκτέννεσθαι ὡς καὶ
उनके, और -वे भाई उनके, जो होनेवाले-थे मारे-जाने जैसे भी
G0846 G2532 G3588 G0080 G0846 G3588 G3195 G0615 G5613 G2532

αὐτοί.
वे।
G0846

> उनमें से हर एक को सफेद चोगा प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की गयी थी।

12 Καὶ εἶδον ὅτε ἤνοιξεν τὴν σφραγῖδα τὴν ἕκτην, καὶ σεισμὸς μέγας
और मैंने-देखा जब उसने-खोली -वह मुहर -वह छठी, और भूकम्प बड़ा
G2532 G3708 G3753 G0455 G3588 G4973 G3588 G1623 G2532 G4578 G3173

ἐγένετο, καὶ ὁ ἥλιος ἐγένετο μέλας ὡς σάκκος τρίχινος, καὶ ἡ
हुआ, और -वह सूर्य हो-गया काला जैसे टाट बालों-का, और -वह
G1096 G2532 G3588 G2246 G1096 G3189 G5613 G4526 G5155 G2532 G3588

σελήνη ὅλη ἐγένετο ὡς αἷμα;
चन्द्रमा सारी हो-गई जैसे लहू;
G4582 G3650 G1096 G5613 G0129

> फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी तो मैंने देखा कि वहाँ एक बड़ा भूचाल आया हुआ है। सूरज ऐसे काला पड़ गया है जैसे किसी शोक मनाते हुए व्यक्ति के वस्त्र होते हैं तथा पूरा चाँद, लहू के जैसा लाल हो गया है।

13 καὶ οἱ ἀστέρες τοῦ οὐρανοῦ ἔπεσαν εἰς τὴν γῆν, ὡς συκῆ
और -वे तारे -उस स्वर्ग-के गिरे -पर -उस पृथ्वी, जैसे अंजीर-का-पेड़
G2532 G3588 G0792 G3588 G3772 G4098 G1519 G3588 G1093 G5613 G4808

βάλλει τοὺς ὀλύνθους αὐτῆς, ὑπὸ ἀνέμου μεγάλου σειομένη.
गिराता-है -उन कच्चे-फलों-को अपने, -के-द्वारा हवा बड़ी हिलायी-जाने-पर।
G0906 G3588 G3653 G0846 G5259 G0417 G3173 G4579

> आकाश के तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे जैसे किसी तेज आँधी द्वारा झकझोरे जाने पर अंजीर के पेड़ से कच्ची अंजीर गिरती है।

14 καὶ ὁ οὐρανὸς ἀπεχωρίσθη ὡς βιβλίον ἑλισσόμενον, καὶ πᾶν ὄρος
और -वह स्वर्ग हट-गया जैसे पुस्तक लपेटा-जाता-हुआ, और हर पहाड़
G2532 G3588 G3772 G0673 G5613 G0975 G1667 G2532 G3956 G3735

καὶ νῆσος ἐκ τῶν τόπων αὐτῶν ἐκινήθησαν.
और टापू -से -उन स्थानों अपने हिला-दिए-गए।
G2532 G3520 G1537 G3588 G5117 G0846 G2795

> आकाश फट पड़ा था और एक पुस्तक के समान सिकुड़ कर लिपट गया था। सभी पर्वत और द्वीप अपने-अपने स्थानों से डिग गये थे।

15 καὶ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ οἱ μεγιστᾶνες, καὶ οἱ χιλίαρχοι,
और -वे राजा -की पृथ्वी, और -वे बड़े-लोग, और -वे सेनापति,
G2532 G3588 G0935 G3588 G1093 G2532 G3588 G3175 G2532 G3588 G5506

καὶ οἱ πλούσιοι, καὶ οἱ ἰσχυροὶ, καὶ πᾶς δοῦλος καὶ ἐλεύθερος,
और -वे धनवान, और -वे शक्तिशाली, और हर दास और स्वतन्त्र,
G2532 G3588 G4145 G2532 G3588 G2478 G2532 G3956 G1401 G2532 G1658

ἔκρυψαν ἑαυτοὺς εἰς τὰ σπήλαια, καὶ εἰς τὰς πέτρας τῶν ὀρέων;
छिप-गए अपने-आप-को -में -उन गुफाओं, और -में -उन चट्टानों -उन पहाड़ों-की;
G2928 G1438 G1519 G3588 G4693 G2532 G1519 G3588 G4073 G3588 G3735

> संसार के सम्राट, शासक, सेनानायक, धनी शक्तिशाली और सभी लोग तथा सभी स्वतन्त्र एवम् दास लोगों ने पहाड़ों पर चट्टानों के बीच और गुफाओं में अपने आपको छिपा लिया था।

16 καὶ λέγουσιν τοῖς ὄρεσιν καὶ ταῖς πέτραις, Πέσετε ἐφ' ἡμᾶς, καὶ
और वे-कहते-हैं -उन पहाड़ों-से और -उन चट्टानों-से, गिरो -पर हम, और
G2532 G3004 G3588 G3735 G2532 G3588 G4073 G4098 G1909 G1473 G2532

κρύψατε ἡμᾶς ἀπὸ προσώπου τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ θρόνου, καὶ ἀπὸ
छिपाओ हमें -से मुख -उस बैठे-हुए -पर -उस सिंहासन, और -से
G2928 G1473 G0575 G4383 G3588 G2521 G1909 G3588 G2362 G2532 G0575

τῆς ὀργῆς τοῦ Ἀρνίου;
-उस क्रोध -उस मेमने-के;
G3588 G3709 G3588 G0721

> वे पहाड़ों और चट्टानों से कह रहे थे, "हम पर गिर पड़ो और वह जो सिंहासन पर विराजमान है तथा उस मेमने के क्रोध के सामने से हमें छिपा लो।

17 ὅτι ἦλθεν ἡ ἡμέρα ἡ μεγάλη τῆς ὀργῆς αὐτῶν, καὶ τίς δύναται
क्योंकि आ-गया -वह दिन -वह बड़ा -उस क्रोध उनके, और कौन समर्थ-है
G3754 G2064 G3588 G2250 G3588 G3173 G3588 G3709 G0846 G2532 G5101 G1410

σταθῆναι?
खड़ा-होने?
G2476

> उनके क्रोध का भयंकर दिन आ पहुँचा है। ऐसा कौन है जो इसे झेल सकता है?"